भक्तमति

कर्माबाई

प्रेम नारायण साहु

❀ जय माँ ❀

परम पूज्य

स्वर्गीय पिताजी 'श्रीमिन्चे प्रसाद पचोवइया

जी को सादर समर्पित।

प्राक्कथन

स्फुट मैंने लिखा है, प्रायः समस्त विधाओं में। परन्तु प्रमाद एवं स्वास्थ्यवशात् प्रबन्ध न लिख सका। जो प्रारम्भ किया, उसे समाप्त न कर सका। कर्मा के वंश में, विशेषकर झाँसी जनपद में, जन्म लेने के कारण नितान्त स्वाभाविक है कि भक्तिमती—भक्तशिरोमणि कर्माबाई के जीवनवृत्त को काव्यरूप देने की अभिलाषा-कमलिनी हृत्सर में प्रस्फुट होती। यह प्रस्फुटन प्रस्फुरणाकेशाभाववश फुल्लत्व में परिणत न हो सका।

साधुवाद है श्री प्रेमनारायण जी 'प्रेम' को कि उन्होंने वह कर दिखाया, जिसका मैंस्वप्नमात्र देखता रहा था। श्री 'प्रेम' खाद्यान्न के श्रमजीवी व्यापारी हैं और स्वाध्याय-द्वारा ही उन्होंने ज्ञानार्जन किया है। जीवीकार्जन- हेतु कठिन श्रम करते हुए भी उन्होंने साहित्य-सेवा का व्रत पाला है; और अनुकरणीय है।

यदि प्रूफ देखने में भी श्रम किया गया होता तो निश्चय हीं प्रस्तुत खन्ड काव्य "भक्तिमती कर्मावाई" एक अनुपम प्रबन्ध वन गया होता। समालोचन की कसौटी पर भी "भक्तिमती कर्मावाई" एक उत्कृष्ट खण्ड काव्य सिद्ध होता है।

काव्यकार ने मानो, एक सर्गविहीन लघुकलेवर महाकाव्य का ही सृजन किया है। रोला छन्द में मङ्गलाचरण, प्रकृति-चित्रण जन्म, बाल्य-कैशोर्य्य-वर्णन, उत्सव, बिवाह, ज्योतिष, पुनरागमन चाटुकारिता, राजव्यस्था, भाग्य, हर्ष, शोक, राग, बिभाग, भक्ति, कर्मकान्ड, सभी प्रकार के विवरण प्रस्तुत प्रवन्ध में संक्षिप्त रूप में विद्यमान हैं। शान्त रस प्रमुख है। हास्य, शृङ्गार और वात्सल्य की अनुभूति पुनः पुनरपि होती हैं। करुण सहरस है।

पाठकों से निवेदन

इस पुस्तक में कुछ अशुद्धि रह गई हैं जो निम्नांकित है। कृपया पुस्तक इन अशुद्धियों को ठीक करके पढ़े।

पृष्ठ	पंक्ति (ऊपर से)	गलत (जो लिखा है)	सही
१	५	सुमंजर	गुञ्जार
१	५	गती	गीत
१	६	जिव्ह	जिव्हा
३	१	प्रतिमा	प्रतिभा
३	२	रूप	रूप है
३	६	महीं	नहीं
३	८	वल वही	वेत्रवती
३	१०	कील	कलि
३	११	तारतले	तरुतले
३	२०	लाभ	लोभ से
४	१४	मार्गविधि	गतिविधि
६	८	वाले	वाला
८	३	वह	बंद
८	१५	रामसात	रामशाह
९	२०	हो	ही
१०	९	अपनायेखी	अपनायेगी
१२	८	सेव	सेवा

पृष्ठ	पंक्ति (ऊपर से)	गलत (जो लिखा है)	सही
१३	७	सभी परस्थ	सभी पस्त
८	३	गगन	गगन सी
१८	४	हाठ	ठाठ
१८	१७	पाल	पल
१९	१२	करते	कहते
१९	१५	ग्रीमान्	श्री मन
१९	१५	साहयं	साध्यं
२०	२	मुनकर	सुनकर
२२	५	पर	पा
२२	८	उधावधि	अध्याविधि
२३	८	अभ्यन्तर[3]	अभ्यन्तर[3]
२४	२	शन्ति	शान्ति
२५	७	से	में
२५	८	फलों	कूलों
२६	५	मार्ग	मार्ग के
२८	१३	रके	आई करके

ओम प्रकाश सक्सेना 'प्रकाश'
बुन्देली हिन्दी, उर्दू कवि, सिने गीतकार
[illegible], दतिया दरवाजे बाहर
झाँसी — २८४००२ (उत्तर प्रदेश)